शर्मा बन्धु
(गोपाल शर्मा, शुकदेव शर्मा, कौशलेन्द्र शर्मा और राघवेन्द्र शर्मा)
अकादेमी पुरस्कार: संगीत की अन्य प्रमुख परम्पराएँ (सुगम संगीत)

SHARMA BANDHU
(Gopal Sharma, Shukdev Sharma, Kaushlendra Sharma and Raghvendra Sharma)
Akademi Award: Other Major Traditions of Music (Sugam Sangeet)

शर्मा बंधुओं (श्री गोपाल शर्मा का जन्म 12 मई 1939, श्री शुकदेव शर्मा का जन्म 8 सितंबर 1946, श्री कौशलेन्द्र शर्मा का जन्म 7 फरवरी 1949 और श्री राघवेन्द्र शर्मा का जन्म 7 फरवरी 1956 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुआ) का सम्बंध ग्वालियर घराने से है। शर्मा बंधुओं ने संगीत का प्रशिक्षण अपने पिता श्री रामानंद शर्मा से प्राप्त किया है, जो कि पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के शिष्य थे।

शर्मा बंधुओं ने विशेष रूप से महान संत तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली और रामचरितमानस जैसे भक्ति ग्रंथों के पदों और चौपाइयों पर आधारित संगीत की रचना की है। आपने भक्ति काल के कबीरदास, सूरदास, मीराबाई, रैदास, रहीम और रास खान जैसे भक्त कवियों और हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत जैसे आधुनिक काल के कवियों की रचनाओं को भी संगीत में ढाला है। शर्मा बंधुओं ने सैकड़ों स्व-रचित भजनों की प्रस्तुतियाँ दी है। साथ ही, आपने महान संगीतकार श्री जयदेव द्वारा फिल्म परिणय के लिए संगीतबद्ध किए गए प्रसिद्ध भजन 'जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाए तरुवर की छाया' को नये रंग में प्रस्तुत किया है। शर्मा बंधु आईसीसीआर के पैनलबद्ध कलाकार हैं। आपने देश-विदेश में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है।

हिंदुस्तानी संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए, शर्मा बंधुओं को देश-विदेश की कई प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा उपाधियों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1989-90 के लिए प्रदान किया गया उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार महत्वपूर्ण है।

शर्मा बंधुओं अर्थात श्री गोपाल शर्मा, श्री शुकदेव शर्मा, श्री कौशलेन्द्र शर्मा और श्री राघवेन्द्र शर्मा को सुगम संगीत में योगदान के लिए वर्ष 2019 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से संयुक्त रूप से सम्मानित किया जाता है।

Sharma Bandhu (Shri Gopal Sharma born on 12 May 1939, Shri Shukdev Sharma born on 8 September 1946, Shri Kaushlendra Sharma born on 7 February 1949 and Shri Raghvendra Sharma born on 7 February 1956 at Muzaffarnagar in Uttar Pradesh) belong to the Gwalior gharana. They received training in music from their father Ramanand Sharma, disciple of Pandit Vishnu Digambar Paluskar.

Sharma Bandhu have specially composed music based on devotional texts (*bhakti sahitya*) such as *Vinay Patrika, Gitavali, Kavitavali* and many padas and chaupies of Ramcharitmanas written by the great saint Tulsidas. They have created compositions based on the Bhakta poets of the Bhakti period of Indian history such as Kabirdas, Surdas, Meerabai, Raidas, Rahim, and Ras Khan and the poets of modern times including Harivansh Rai Bachchan, Mahadevi Verma and Sumitranandan Pant. Sharma Bandhu have presented hundreds of self-composed bhajans such as the famous bhajan 'Jaise Suraj ki Garmi se Jalte huey tan ko mil jaaye Taruvar ki chhaya', originally composed by the great composer Shri Jayadeva, in the Hindi film Parinay. Sharma Bandhu are empanelled with I.C.C.R. and have performed in many prestigious music festivals in India and abroad.

For their contribution in the field of Hindustani music, they have been honoured with many prestigious titles and awards from many prestigious cultural institutions in India and abroad. These include the Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademi Award conferred by the Government of Uttar Pradesh for the year 1989-90.

Shri Gopal Sharma, Shri Shukdev Sharma, Shri Kaushlendra Sharma and Shri Raghvendra Sharma jointly receive the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2019 for their contribution to Sugam Sangeet.